



संत कबीर अकादमी

(संस्कृति विभाग, उ.प्र.)

एवं

भाषा विभाग, कला एवं सामाजिक विज्ञान संकाय

स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित



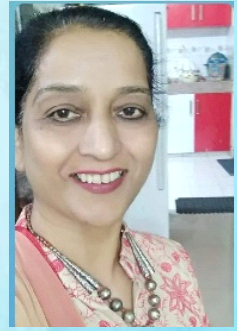
तिथि: 11 से 13 सितम्बर, 2025 तक

स्थान: स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय
मेरठ

नाटक:- कहन कबीर

नाट्य आलेख: श्री राजेश जोशी

निर्देशिका - सुश्री सुषमा शर्मा, प्रयागराज



सुश्री सुषमा शर्मा रंगमंच की दुनिया में एक सक्रिय नाम, पिछले 30 वर्षों से रंगमंच में अभिनय, निर्देशन, नाट्य लेखन, नाट्य प्रशिक्षण तथा नाट्य मंचन का गहन अनुभव है। लगभग 35 नाटकों में अभिनय तथा 54 नाटकों में निर्देशन। अब तक उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार दिल्ली उड़ीसा कोलकत्ता राजस्थान गुजरात आदि में आयोजित राष्ट्रीय स्तर के नाट्य समारोह में नाट्यमंचन। बाल नाट्य कार्यशालाओं के माध्यम से नई पीढ़ी में नाट्य संस्कार तथा नाट्य प्रशिक्षण इसके अंतर्गत खिला फूल गुलाब का एवं सात नाटकों की एक पुस्तक का प्रकाशन भी शामिल है। 1996 में समन्वय संस्था की स्थापना तथा 1997 में भारतेन्दु नाटक अकादमी लखनऊ में कार्य का अनुभव प्राप्त किया। 2012 में समन्वय संस्था ने समन्वय रंग मंडल के रूप में कार्य करना प्ररंभ किया। अभिनय के क्षेत्र में सन् 1990 से लेकर 95 तक विभिन्न संस्थाओं के साथ अभिनय का अनुभव लिया समन्वय रंग मंडल के गठन के बाद अपनी संस्था में आज तक निरंतर एक अभिनेत्री के रूप में भी सक्रिय हैं जिसमें बच्चों के लिए महिलाओं के लिए अनेक नाटकों का निर्देशन किया जिसके अंतर्गत चार एकल नाटकों में भी अभिनय तथा निर्देशन किया धूप का एक टुकड़ा, कृष्णा, चोला मोर माटी तथा एक थी सारा में उत्कृष्ट अभिनय संस्कृत भाषा के नाटकों का निर्देशन जिसके अंतर्गत नागानंदम श्रूयते न तू दृश्यते अष्टमं सर्ग, माधवी प्रतिमा नाटकम् उत्तर प्रश्नम् तथा मृच्छकटिकम् आदि। इसके अतिरिक्त आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के साथ भी कई कार्य किये।

कथासार- “कहन कबीर” डॉ० राजेश जोशी द्वारा लिखित एक कोलाज नाटक है जो अनेक नाटकों और कबीर पर लिखे आलेखों की अपने तरीके से संत कबीर के बारे में बात करता है। यह नाटक कबीर के जीवन पर कम उनके विचारों और संघर्षों पर अधिक बात करता हुआ दिखाई देता है। इससे पूर्व इस नाटक के 33 प्रदर्शन देश के विभिन्न शहरों में हो चुके हैं। समन्वय रंग मंडल द्वारा इस नाटक की यह पहली प्रस्तुति है। कबीर जैसे क्रांतिकारी, संघर्षशील, सदा सत्य के पक्ष में बोलने वाले और निर्भीक व्यक्तित्व की, जिससे हम, आज के सच को खुली आंखों से स्पष्ट रूप से देख सकें। अपनी संस्था की युवा पीढ़ी को कबीर के बारे में जानकारी देते हुए इस नाटक को तैयार करना सचमुच एक सुखद अनुभव रहा।

मंच/मंच परे कलाकार- श्री अर्नव राय, श्री दीपेन्द्र सिंह, राहुल यादव, अरुण शुक्ला, ऋतिक श्रीवास्तव, जगदीश गौड़, अभिषेक शर्मा, प्रज्ञान राय, चंकी बच्चन, वर्षिता श्रीवास्तव, प्रशान्त वर्मा, टोनी सिंह, मो० हामिद, चंकी बच्चन, आरती गुप्ता, एवं जगदीश गौड़, डॉ० शारदा कुमारी पाठक, पदमजा राय, डॉ० ज्योति मिश्रा, डॉ० राजेश जोशी, सुशील कुमार राय, सुषमा शर्मा।

नाटक: "संत कबीर" कशी से मगहर तक

निर्देशक— श्री हरिश्चन्द्र

नाट्य आलेख: श्री सुशिल



श्री हरिश्चन्द्र कानपुर ने उ०प्र० संगीत नाटक अकादमी से उस्ताद रशीद खाँ वारसी से पद्म श्री गुलाब बाई और सोहेल बाबू से नौटंकी गायन व अभिनय सीखाया। पद्मश्री गुलाब बाई के थियेटर में नौटंकी में अभिनय किया। 1988 से कला के क्षेत्र में कार्यरत हैं उ०प्र० संगीत नाटक अकादमी से 2010 में पुरस्कृत किया जा चुका है।

कथासार— नौटंकी का आरंभ एक संत के आश्रम से होती है। संत शिष्यों को कबीरदास जी के बारे में बताते हैं। नीरू जुलाहा और नीमा निसंतान दंपति को कबीर कैसे मिले और वे कबीर को अपने घर ले आए। कबीर धीरे-धीरे बड़े हुए नीरू ने उन्हें कपड़ा बुनना सिखया। कबीर का मन साधु संतों की संगत व संतसंग में रमा रहता था।

कबीर गुरु रमानंद से कहते हैं कि उन्हें अपना शिष्य बना ले परन्तु रामानंद कबीर को तुच्छ कहकर इंकार कर देते हैं आखिर वो कबीर को अपना शिष्य स्वीकार कर लेते हैं। सूत्रधार रूपी संत शिष्यों को बताते हैं कबीर एक सच्चे समाज सुधारक की तरह धार्मिक आडंबरों के खिलाफ आवाज उठाते थे ऐसे कई घटनाक्रम नौटंकी के माध्यम से मंच पर प्रदर्शित होते हैं।

अंत में सूत्रधार रूपी संत शिष्यों को बताते हैं। मगहर में संत कबीर की समाधि और मजार दोनों हैं आज भी वहां कबीर के अनुयायियों का मेला लगता है।

मंच के कलाकार—1. श्री राजकपूर, श्री सुरेश शर्मा, विशाल समुद्रे, प्रभात रघुवंशी, श्री रामशरण, श्री साहिद, साजन कुमार, साहिल, रिषभ, सुंदरम शर्मा, बृजपाल मौर्य हेमन्त, निहारिका, मुन्नी, सोनी, रानी बाला, मीनू, बेबी महर, आयुष्मान, संदीप, प्रियंका, रहीम, दीप, विशाल, अरविंद, प्रियंका, मधु, धर्मेन्द्र, श्यामा, आजाद, अर्जुन।



नृत्यांगना : देविका देवेन्द्र एस. मंगलामुखी

देविका देवेन्द्र एस मंगलामुखी एक अग्रणी ट्रांसजेंडर अधिकार कार्यकर्ता, कथक कलाकार और भारत में लैंगिक समानता की पैरोकार हैं। मूल रूप से राजस्थान की रहने वाली और अब आगरा में रहने वाली, वह उत्तर प्रदेश ट्रांसजेंडर कल्याण बोर्ड की राज्य कार्यकारी सदस्य सलाहकार के रूप में कार्यरत हैं और भाजपा से संबद्ध हैं।

भारत की पहली ट्रांसजेंडर कथक कलाकार के रूप में, उन्हें भारत सरकार से प्रतिष्ठित मीरा सम्मान प्राप्त हुआ है और उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की है। उनकी प्रस्तुतियों ने खजुराहो नृत्य समारोह, मोदेरा नृत्य समारोह, ताज महोत्सव जैसे सांस्कृतिक समारोहों और अंतर्राष्ट्रीय मंचों की शोभा बढ़ाई है।

कला के अलावा, देविका एक शाकाहारी, लेखिका और पशु अधिकार कार्यकर्ता हैं। उन्होंने लखनऊ के एसजीपीजीआईएमएस में भारत की पहली ट्रांसजेंडर क्लिनिकल केयर यूनिट की स्थापना और ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए अलग शौचालयों की वकालत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने भारत की पहली ट्रांसजेंडर लाइब्रेरी के शुभारंभ में भी योगदान दिया और चंबल साहित्य महोत्सव की स्थापना की।

एक प्रतिष्ठित शिक्षिका, देविका एलबीएसएनएए, मसूरी में विजिटिंग फैकल्टी हैं और उन्होंने दिल्ली और राजस्थान पुलिस अकादमियों में पुलिस अधिकारियों को लैंगिक संवेदनशीलता पर प्रशिक्षण दिया है। सक्रियता, शिक्षा और कला के क्षेत्र में उनका काम उन्हें भारत में समावेशिता और सामाजिक परिवर्तन की एक सशक्त आवाज बनाता है।

नाटक : कबीरा

निर्देशक : श्री हरीशचन्द्र अवस्थी उर्फ राजा अवस्थी

रंगमंचीय अनुभव

वर्ष, 1960 से निरन्तर



उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी से वर्ष, 2010 में अवार्ड पाने के अतिरिक्त नाटक — भगवतज्युकीयम का मंचन वर्ल्ड ड्रामा फेस्टिवल, नार्वे में 1991 में करने के अतिरिक्त ग्लोबल थियेटर फेस्टिवल, नई दिल्ली में 1991 में किया गया। इसके अतिरिक्त 1993 में फिनलैण्ड में नाटक दंगा का मंचन किया गया। साथ ही आल इण्डिया रेलवे ड्रामा कम्टीशन—मुम्बई में वर्ष, 1993 में ही दंगा नाटक का मंचन कर सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का एवार्ड प्राप्त किया गया। साथ साथ विभिन्न संस्थाओं से समय—समय पर अनेकों अवार्ड प्राप्त किये गये। राष्ट्रीय, प्रादेशिक एवं जिला स्तरीय लगभग 100 हिन्दी नाटकों में अभिनय के साथ ही लगभग 35 नाटकों का निर्देशन किया गया।

12 संस्कृत नाटकों में अभिनय और निर्देशन किया गया।

उपन्यास रश्मिरथी और चित्रलेखा का नाट्य रूपान्तरण किया गया।

विश्व प्रसिद्ध नाट्य निर्देशक सर्वश्री रंजीत कपूर, उर्मिल कुमार थपलियाल, विलायत जाफरी, रतन थियम, सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ आदि के निर्देशन में रंगमंच किया।

आकाशवाणी के ए ग्रेड आर्टिस्ट लगभग 100 आकाशवाणी नाटकों में अपनी आवाज दी।

दूरदर्शन के लिये बीबी नातियों वाली, तीन शराबी, एक टुकड़ा पीतल का, बूढ़ी काकी, नीम का पेड़, माटी, अंधा गांव, पथरीले रास्ते, ख्याली पुलाव, पदमा, द्वार, नवाब बूटा और बेटी ससुराल की आदि धारावाहिकों में अभिनय किया।

कथासार— कबीर बचपन से ही बहुत जिज्ञासु थे। अपने माँ—बाप से नित नये नये प्रश्न किया करते थे कि ईश्वर क्या है। धर्म क्या है और यह जीवन क्या है। माँ—बाप जब तक उत्तर दे पाये, दिया परन्तु जब प्रश्न उनके ज्ञान से भी ऊपर जाने लगे तो उन्होंने कबीर से कहा कि तुम्हारी इन बातों का उत्तर कोई गुरु ही दे सकता है। बस यह सुनना कि कबीर निकल पड़े गुरु की खोज में। और रामानन्द के रूप में उन्हें गुरु मिले जिन्होंने ज्ञान का अथाह खजाना कबीर पर लुटा दिया।

कबीर ज्ञान प्राप्त करके निकल पड़े उस समाज की ओर जहाँ धर्म और जाति के नाम पर सदा झगड़ा होता रहता था। कबीर ने लोगों को समझाया कि ईश्वर एक है हम सभी उसकी संताने हैं आपस में बैर अच्छा नहीं होता। यदि कोई धर्म है तो इंसानियत का धर्म और यदि कोई बोली है तो प्रेम की भाषा।

पहले तो लोगों ने कबीर की बातों को नकार दिया परन्तु धीरे धीरे एक के बाद एक आदमी आने लगा और कबीर के अनुयायी बढ़ते चले गये। आज भी लोग कबीर को सुनते, उसका अनुसरण करते हैं।

पात्र परिचय

मंच पर

नीमा	अभिषेक शर्मा
नीरू	ज्योति सिंह
बालक कबीर	भाव्या गुप्ता
रामानंद	जितेन्द्र गुप्ता
कबीर	राजू पाण्डेय
ननकू	अभिषेक यादव
व्यक्ति एक	अली अब्बास

मंच परे

मुल्ला	नवीन श्रीवास्तव
ब्राह्मण	अंकुर सक्सेना
औरत	दिव्याजीत
मुख सज्जा	दिनेश अवस्थी
प्रकाशन	मनीष सैनी
संगीत	राहुल शर्मा
गायन	श्रीकांत श्रीवास्तव एवं नीरा सिन्हा, संतोष शिप्रा
प्रस्तुति नियंत्रक	प्रदीप श्रीवास्तव
लेखन व सह निर्देशक	नवीन श्रीवास्तव
दृश्य परिकल्पना	राजा अवस्थी



